

ज्ञानदीपका ॥

— ० —

जिसमें

प्रेमानुरागियों के चित्त विनोदार्थ

स्वयं ब्रह्म परमेश्वर व महादेवजी के कीर्त्तन व
स्तोत्र व हनुमानअष्टक अतिसुगमता के
साथ अनेक प्रकार के ललित छन्दों में
वर्णित हैं ॥

जिसको

भया श्रीदत्तसिंह रईस रुधौली जिलाबस्ती
ने बनाया और उसी पुस्तक को पंडित
दयानन्द कविने संशोधन किया ॥

— ० —

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेखाने में छपी

फरवरी सन् १८८९ ई०

पहलीबार १५०० ॥

इतिहास ॥

प्रकट हो कि इस कारखाने में सब विषयों की पुस्तकें देवनागरी के अक्षरों में उपस्थित हैं केवल तफसील मुतफर्रिकतौरपर पुस्तकों की की जाती है दीगर कुतुब भी मुलाहिजा करने फेहरिस्त कुतुब व अलाहिदा मिल सकती हैं ॥

१-इतिहास ॥

महाभारत कामिलवार्त्तिक भाषा व महाभारत कामिलनज्म दोहा व चौपाई, रामायण तुलसीकृत मूल और टीका हरूफवहरूफ सातोंकाण्ड, रामायण वाल्मीकीय भाषा, रामायण अध्यात्मविचार भाषा, अध्यात्म-रामायण मै तिलक भाषा, ब्रजविलास इत्यादि ॥

२-पुराण ॥

देवीभागवत बारहोंस्कन्ध, लिङ्गपुराण, रघुवंश मै टीका, सुखसागर तर्जुमा श्रीमद्भागवत, वाराहपुराण, शिवपुराण, गरुड़पुराण, गर्गसंहिता, विष्णुपुराण, भविष्यपुराण, गणेशपुराण, बृहन्नारदीयपुराण, स्कन्दपुराण, रघुवंश मूल इत्यादि ॥

३-टीका भाषा उपनिषद ॥

ईशावास्य, कठवल्ली, केन, मुण्डक, प्रण ॥

४-वेदान्त ॥

योगवाशिष्ठ भाषा, याज्ञवल्क्यस्मृति भाषा, पारसभाम भाषा, भगवद्गीता नवलभाष्य, जिसमें चार टीका यानी शंकरभाष्य, आनन्दगिरिजी, श्रीधरजी, नवलभाष्य टीका भाषा नवीन बनकर तैयार है ॥

भगवद्गीता मै टीका आनन्दगिरिजी, भगवद्गीता मै टीका हरिवंश लाल, भगवद्गीता भाषा, हरिवल्लभजी, बीजककवीरदास, ज्ञानप्रकाश, पदार्थविद्यासार, अमृतसुखबोधनी, वैरागप्रकाश इत्यादि ॥

विज्ञापन ॥

प्रकट हो कि ज्ञान भक्तिकी प्रेमी हरि चरणोंकी नेमी मु-
सम्मात पानकुंवरिने अपने कारिन्दा बाबू गंगादीनसिंह को
यह इजाजत दिया कि कोई ग्रन्थ ऐसा बने कि जिसमें मेरे
स्थापन किये हुये महादेव औ परमेश्वरजीके कीर्तन स्तोत्र
सहितहों—इस बातको सुन मैंने इस ग्रन्थ ज्ञानदीपकाको रचित
किया और मुताबिक इच्छामुसम्मात मजकूर के छपवाया ॥

{ भइया श्रीदत्तसिंह वर्मा रईस }
रुधौली जिला बस्ती }





ज्ञानदीपका

देवदत्तकृत

दोहा १ ॥

हे गणपति हे गौरि पति हे राधे पति श्याम ।
कष्ट निवारण कीजिये पूरण करि सब काम ॥

सवैया २ ॥

चन्द्र चकोरन सो गति जैसहि और अहै जिमि अम्बुज भानू ।
चात्रिक को जलबुंद है स्वातिके औ कृपणी को यथा धन धानू ॥
बाससुगन्ध है भौरन को देवदत्तजू दातहि दान बखानू ।
वैसहि प्रीति दयाकरि देहु निजै पद पंकज में भगवानू ॥

सोरठा ३ ॥

देवहि सब शिरनाथ ग्रन्थलिखो कलिमल हरण ।
मन इच्छित सुखदाय करहि विष्णु शिव सर्वदा ॥

चौपाई ४ ॥

सुन्दर कथा कहौ अब गाई । सुनहु भक्तजन तन मन लाई ॥
नृपति एक बुधमांह उदारा । तप हेतुक मनकीन विचारा ॥

राजकाजसुखसम्पतित्यागी । कीनपयान विपिन तपलागी ॥
 सन्मुख पतिनी जोरेहाथा । हमहूँ चलब प्राणपति साथ ॥
 बहुविधिसोपतिनिहिसमुभाई । विपिनमहादुखहैअधिकाई ॥
 चलौ न प्रिय तुम साथ हमारे । बैठे राजकरहु सुख सारे ॥
 तबहिं नारि बोली मृदुबानी । सेवाकरब विपिनसुखमानी ॥
 मान्यो नहिं बहुभांति बुभाई । राउ तुरत बोल्यो हर्षाई ॥

दोहा ५ ॥

जो नहिं भावत राज्यप्रिय चलौ हमारे साथ ।
 शंकर को सेवन करै पद पंकज धरि माथ ॥

छन्द ६ ॥

बचन बोलि सप्रेम सो पुनि नारि लीन्यो संगमें ।
 विपिन मग सुन्दर लियो भस्मै रमायो अंगमें ॥
 जाय बनविच ध्यानदीनो अन्न पान बिहायकै ।
 युगन लौं तपघोर लखिकर शम्भु प्रकटेवआयकै ॥

चौपाई ७ ॥

प्रकट रूप जबहीं शिव कीनो । तब हर्षितनृप यहवरलीनो ॥
 सदा रहो मम नयनन आगे । मम तुम नामरहै सँग लागे ॥
 एवमस्तु तब शंकर बोल्यो । सबहिभांतिमनकोजबतोल्यो ॥
 सुमनमाल कर कमल उठाई । सेवक कंठ दीन पहिराई ॥
 भांतिअनेक दास निजजानी । भक्तिअचलदीन्योमनमानी ॥
 कलियुग जाइ धरो अवतारा । उत्तम कुल महँ होउउदारा ॥
 पूरण आय करब तव इक्षा । जसतुमकोदीन्योयहशिक्षा ॥
 सुनिशिववचन हर्षहियमाहीं । प्रेमउदधिबहुविधिउमगाहीं ॥

छन्द ८ ॥

बरपाय सुन्दर शम्भु सों हर्षित निजै आश्रम गयो ।
 दिन रैन मनपदकंज लाग्यो कालकलु बीततभयो ॥
 फिरत्यागि सब भ्रमजालको हरिमें रमायो प्रेमको ।
 भगवन्त वैसहि भक्तिदीनो शम्भुदीन जो नेम को ॥

दोहा ९ ॥

हरि हर सों बर पायकै हर्षित भांति अनेक ।
दान दियो बहु विप्रकहँ यज्ञ कियो अविषेक ॥

चौपाई १० ॥

सहियुग प्राणी आयो भवना । रहित भयो जब आवागवना ॥
जायकियो बैकुण्ठ निवासू । तहँ सबही विधि भयो सुपासू ॥
पायो निज उचित प्रतेका । बस्त्ररु भूषण भांति अनेका ॥
बहुत दिवस बीत्यो विधिनाना । तब हर्षित बोल्यो भगवाना ॥
निज आज्ञा पूरण के हेतू । बचन सुनायो भृगुकुल केतू ॥
जायशरीर धरो क्षितिमाहीं । मम आज्ञा जनिकरहु वृथाहीं ॥
बचन मानि भुवमंडल आयो । जम्बूदीप सुरुचिर सुहायो ॥
जन्मलियो उत्तमकुल आई । रबिवंशी श्रिनेत बताई ॥

दोहा ११ ॥

चेतसिंह के सुत भयो हरद्वार अभिराम ।
तासु सुवन है प्रकट भे जक्त बहादुर नाम ॥
अवधपुरी ईशान दिशि योजन पंचप्रमान । १२
सुघर रुधौलीग्राम है जन्मलियो जहँ आन ॥
प्रभु प्रेरित सुख सम्पदा पासगयो सब आय । १३
दिनपरदिन बाढ़तरहेउ नीरज जिमि जलपाय ॥

छन्द १४ ॥

पायजल जिमि जलज बाढ़ेव चन्द्रजिमि नभमें बढ़ेव ।
तैसेइ बढ़ेव यहि भूमि में गज अश्वहू रथ पै चढ़ेव ॥
प्रजन को बहुभांति पाल्यो वेदकी अनुसारज्यों ।
जन्म पूरव में भयो सुख लोक इमि महँ पापत्यों ॥

चौपाई १५ ॥

कछुदिनकीन्यो भोगविलासा । युवा स्वर्गमहँ कियउ प्रकासा ॥
सबविधि कर्मधर्म भये भारी । वेदशास्त्रकी मति अनुसारी ॥
औ बृत्तान्त कहौ सुखदाई । सुनहु सुसज्जन ध्यान लगाई ॥

पतिनीताकीअतिसुकुमारी । ताकहँ दुःख दुसह भयो भारी ॥
 पतिविछोहकीन्योमुखचारी । अंकलिखननिजहृदयविचारी ॥
 छूटेवतबहुं न हरिहरनामा । जपेउध्यानधरितजिनिजकामा ॥
 शंकत्यागिसबशोकविहाई । कारज गृहकर लीन उठाई ॥
 बीतगयोकलुदिनयहिभांती । हरि हर रूपरही रँग राती ॥

दोहा १६ ॥

शम्भुदियो वरदान जो सो दिन गये नियराय ।
 पूरणइच्छा हेतु कहँ शारद दियउ पठाय ॥

छन्द १७ ॥

शारदहि दीनपठाय हरिहर आपहिय महँ बसिरहेव ।
 प्रेरण कियो मनको सबै विधि शम्भुथापनको कहेव ॥
 तब नारिभांति विचारिबहु वरदान मालिकसोंलियो ।
 अतिस्वच्छमंदिर बननको सबहुकम सेवककहँदियो ॥

चौपाई १८ ॥

मनक्रम वचन आश प्रभुकेरो । जबतै शारद हृदय बसेरो ॥
 नेम धर्म सों करहिं अहारा । ब्रते रहहिं जो विविध प्रकारा ॥
 दया दृष्टि उरमहँ अधिकाई । राजनीति पददीन चलाई ॥
 दान देहिं द्विजकहँमनलाई । सन्तन को बहु करतबड़ाई ॥
 भूखो अन्न बिना जो आवैं । ताकहँ भोजन विविधकरावैं ॥
 जाके बस्त्रनहीं कलु पासा । ताको सबविधि करतसुपासा ॥
 गुणकोलीनऔगुणहित्यागू । ज्ञाननमें नहिं कियउ विभागू ॥
 करों कहांतक अधिकबड़ाई । कीर्ति रुचिर है मतिलघुताई ॥

दोहा १९ ॥

मनमहँ धर्म विचारिकै पंडित लियो बुलाय ।
 बोलत करजोरे भई लग्न देहु ठहराय ॥

छन्द २० ॥

वेदके अनुसार पंडित लग्न शुभ शोधन कियो ।
 मतएक होय एक ठौर बैठेउ हर्ष सों बोलत भयो ॥

यह शुभ नक्षत्र परम पावन शम्भु आवन योग है ।
मंदिर कि साइत करहु हर्ष सों स्वर्ग सुखको भोगै ॥

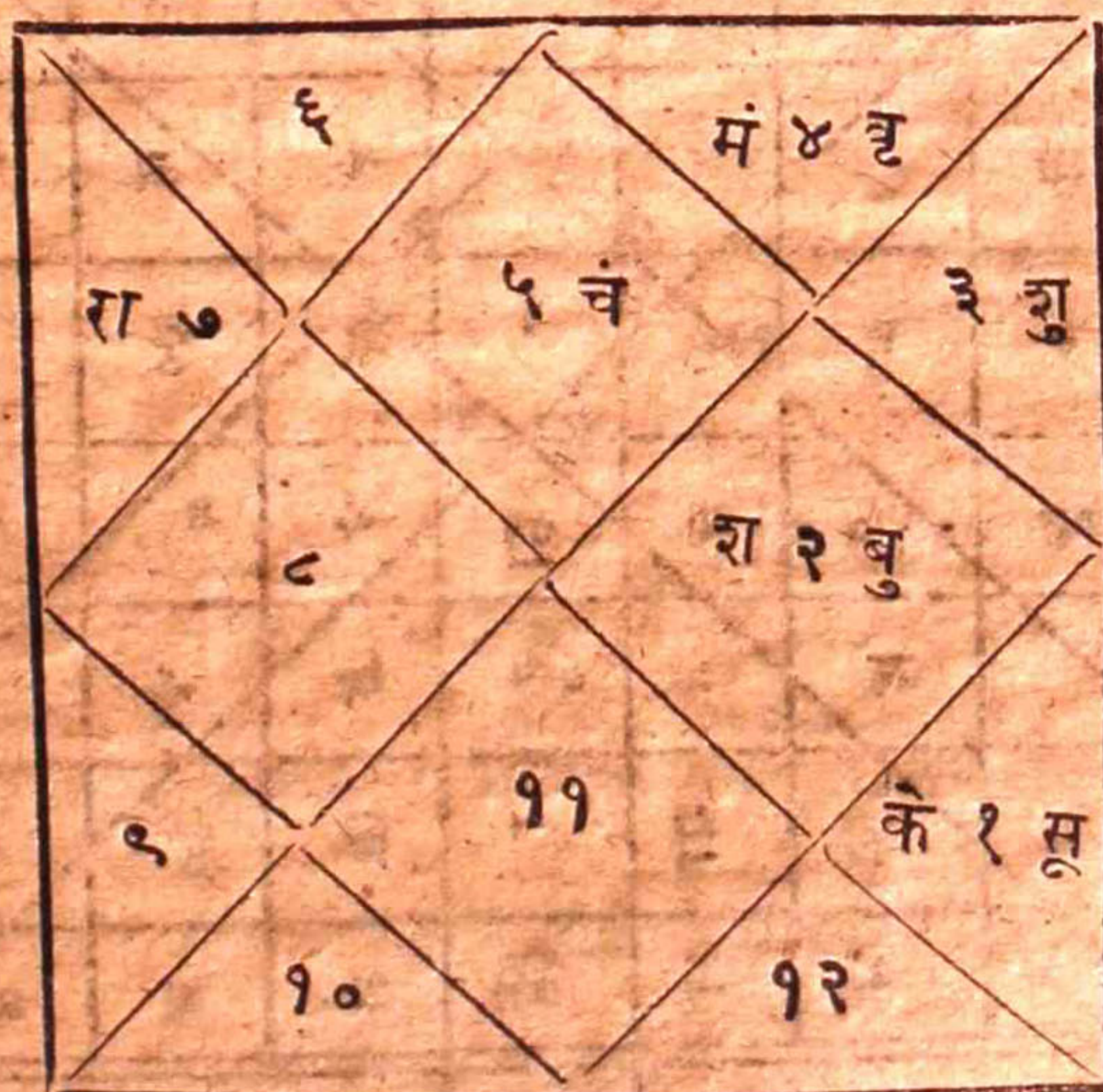
चौपाई २१ ॥

बचनमानिसब विप्रनकेरा । कीनेउ सब सामान घनेरा ॥
जो जो विप्र दीन फुरमाई । सो सब संयम लीन कराई ॥
पूर्वदिशिनिजभवनहिं पासा । मंदिररचनके कियउ प्रकासा ॥
दक्षिणदिशिशिवको अस्थाना । उत्तररमासहित भगवाना ॥
पुरजनके मन अधिकहुलासा । शम्भुपुरीमहँ करहिं निवासा ॥
रुद्रपुरी यह सब युगकेरी । बिन शिवपुरमहँ लागत थोरी ॥
जैसोहै रुद्रावलि नामा । तैसो अब सोहिय यह धामा ॥
ऋतुबसन्त वैशाखसुहावन । शुक्लपक्ष सुन्दर शुभ पावन ॥

दोहा २२ ॥

संवत शशि ग्रह युगहु क्षिति एकादाशि दिनचन्द ।
नैवपरी शुभयोगमें सबविधि सुखको कन्द ॥
शुभदिन शुभ साइति घड़ी योग मुहूर्त विचार ।
नैवचक्र यह लिखतहौं ज्योतिषके अनुसार ॥

अथ नैव कुण्डली चक्रम् ॥

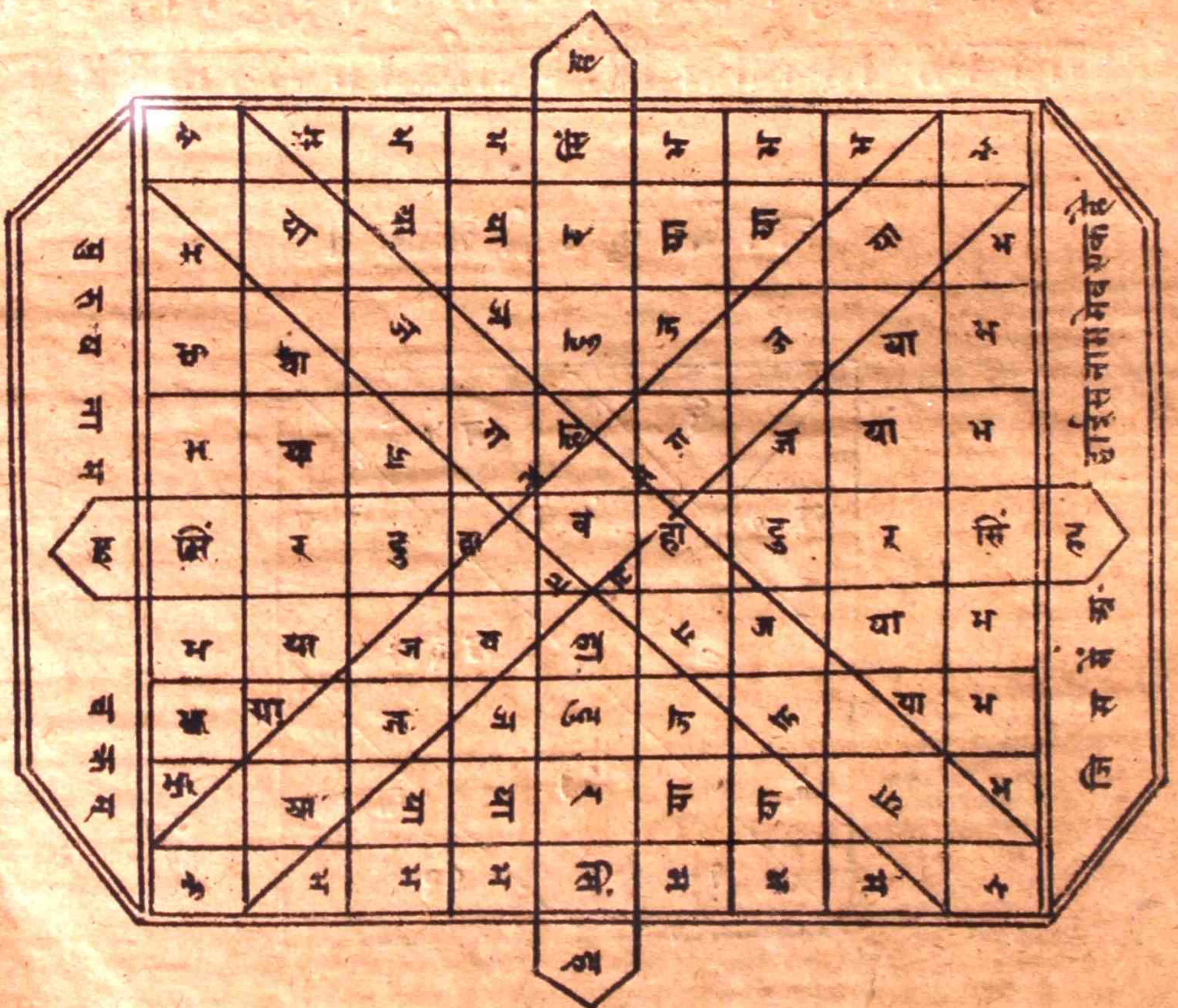


सर्वैया २४ ॥

नैवलखैं सखिमंदिरको करसों बहुरंग गुलाल उड़ाहीं ।
 षोडशअंगशृंगारनिरेखत कामकीवाममनैसकुचाहीं ॥
 गानकरैं शुचिमंगलको उपमातेहिकोकहिजातहैनाहीं ॥
 मोहिगयो सुनिकै सुरनायक औरहु देव सबैहर्षाहीं ॥

दोहा २५ ॥

जपासहित अतिही प्रबल आशिष दियो गँभीर ।
गनपति शुभ के सदन हैं बोलि वचन वर बीर ॥
तकु बसु बाहन साजिकै निरखत यह सामान ।
बवश मौन निज लोक में दीनो सबविधि कान ॥
हारी दूजो अक्षरणा पांच पंक्ति महुँ मानि ।
दुनिय मध्य कीरति कियो नामै लीजै जानि ॥
रमा राम शिव गौरि को सब विधि पूरो भक्त ।
सिंहसहित प्रथमाक्षरहिं पुरुष प्रकट बिच जक्त ॥



		पा		
अथ स्त्री	पा	न	री	नामचक्रम्
पा	ना	कु	अ	री

जिसमें तीन (पा) में जहां से बांचो नाम पूरा होजायगा ।

चौपाई २९ ॥

पीत सुभग शुभ वस्त्र मँगार्ई । उत्तम द्विजकहँ दीनबुलार्ई ॥
 पूजि चरण सब विप्रन केरो । द्रव्यदियो बहुभांति घनेरो ॥
 बहु प्रकार व्यंजन बनवाई । हर्षिहृदय द्विजवरनजिंवाई ॥
 पावनकरि द्विज भे सुखकारी । प्रेमसहितशुभवचनउचारी ॥
 सबविधि पूजै आश तुम्हारी । सत्यवचन करि हैं त्रिपुरारी ॥
 दै वरद्विज निजआश्रमआयो । तबशुभकरता भोजनपायो ॥
 बाजनबाजत विविधि प्रकारा । डफ भेरी लौं आदिनगारा ॥
 नाच गान बहुविधि सों होई । देवलोग चक्रित लखिसोई ॥

दोहा ३० ॥

नभ मंडलमहँ देवसब हर्षित भांति अनेक ।
 पुन्य पुंज कहँ देखकर कीन्यो नहीं विवेक ॥

सवैया ३१ ॥

बीतिगयोयहनेवकोकारज शिल्पकोकारबदेवअधिकारी ।
 पंडित पाठकरै हरको रचनाकी सबै विधि होततयारी ॥
 सुन्दर जाननहार सुलायक मंदिरके जोरहे बड़भारी ।
 दूरहितेतेहिको बुलवायहु द्रव्यदियो मतिकेअनुसारी ॥

चौपाई ३२ ॥

रचना रुचिरकरहिं सबनीको । मंडफहरिजू अरुशिवजीको ॥

ज्ञानदीपका ।

कछुदिन बीतेउ यही प्रकारा । मंदिरबनिकर भयउतयारा ॥
 कलशी कलश सूवरण केरी । ताहि बनत नहिंलागेउदेरी ॥
 मार्गशीर्ष सित पंचमिआई । कलश सूवरण दीन धराई ॥
 शिव मंडफ तिरशल बिराजै । हरिपैचक्र अधिकछबिछाजै ॥
 कलशी हरके भौन सुहाई । हरिकोबिनकलशिहसुखदाई ॥
 विविधिभांति के रंग मँगाई । मंडफ चहुंदिशि दीन रँगाई ॥
 मन्दिरकी रचना अधिकारै । पावन लोक समान सुहाई ॥

दोहा ३३ ॥

पावन अरु कैलासपुर जैसो शोभा देय ।
 मंडफ तैसो यह बन्यो निरखत मन हरलेय ॥

कवित्त ३४ ॥

सुघर समान अबहोत शिव थापन को जाके उपमा को कोऊ सकतन गाई है ॥
 बख बहु भांतिन सौं रुचिर बनाय कर द्विजनके हेतुनको संयम कराई है ॥
 अन्न अरु घृत को जुराय एक ठौर करि भोजनके काज बहुतायत धराई है ॥
 दधि अरु औरहू समाननको कौनकहै बड़ेहैंकुबेर ताको शोचलति आई है ॥

चौपाई ३५ ॥

सबसामानकियो यकठामा । हरिजू अरु शिवथापन कामा ॥
 फागुनशिशिर सुहावनपाई । शुभसाइत सबबिधि ठहराई ॥
 काशी अवधपुरी सुखदाई । तहँ सौं पंडित लियो बुलाई ॥
 वेद पुराण जो जाननहारे । करहिंकाम निजमति अनुसारे ॥
 औरो बहु पंडितन जुराई । साइत की कीन्हीं रुचिराई ॥
 वेदशास्त्र की मति प्रभुताई । वेदी जुग द्वारेहँ बनवाई ॥
 तापरअग्निकुण्डविधिनाना । आहुतिहेतु रच्यो करिज्ञाना ॥
 मंडफ छायो ताके ऊपर । यहिविधि शोभित बेदीदूपर ॥

दोहा ३६ ॥

बंदनवार बँधाय कर कदली मूल गड़ाय ।

ध्वज पताक बहुरंगके कलश दियो धरवाय ॥

कवित्त ३७ ॥

यज्ञ को समान जौन वेदनमें देवकहेव तौन एक अत्र करि हर्ष को बढ़ाई है ।
सुन्दर समुद्र सुख परचा अवगाध महानवत लिखाय ठौर ठौरन पठाई है ॥
चंचरीक पुंज जिमि पंकजपै गूंजरहे तिमि सतजन चित लाखि थहराई है ।
तिथिदिन पाय सब नात बन्धु हित आय गुरु औ पुरोहितसो अति छबि छाई है ॥

चौपाई ३८ ॥

सुन्दरतिथिशुभघड़ीसुखासन । विद्वज्जनदीन्यो अनुशासन ॥
मज्जन अरु विधिवतकरिपूजा । हरिहरप्रेम लग्योनहिंदूजा ॥
स्वच्छ वस्त्र आभूषण कीन्यो । जाय यज्ञपर आसन लीन्यो ॥
पूजाहोन लगे विधि नाना । नभमहँ निरखतहरभगवाना ॥
पर भयो जब यज्ञ अनूपा । हेतु बरात सज्यो सब भूपा ॥
जिमिदशरथबरातशुभसाज्यो । गजरथअश्वबिविधिविधिगाज्यो ॥
होतजनकपुरजिमिअगुवाना । दूलहशोभित श्री भगवाना ॥
जिमिहिमवंतजनकगृहभीरा । तैसइ भीर यहां गम्भीरा ॥

दोहा ३९ ॥

वाजनवाजतविविधिविधि शोभितपणवानिशान ।
ध्वज पताक बहुरंग के करहिं अप्सरा गान ॥

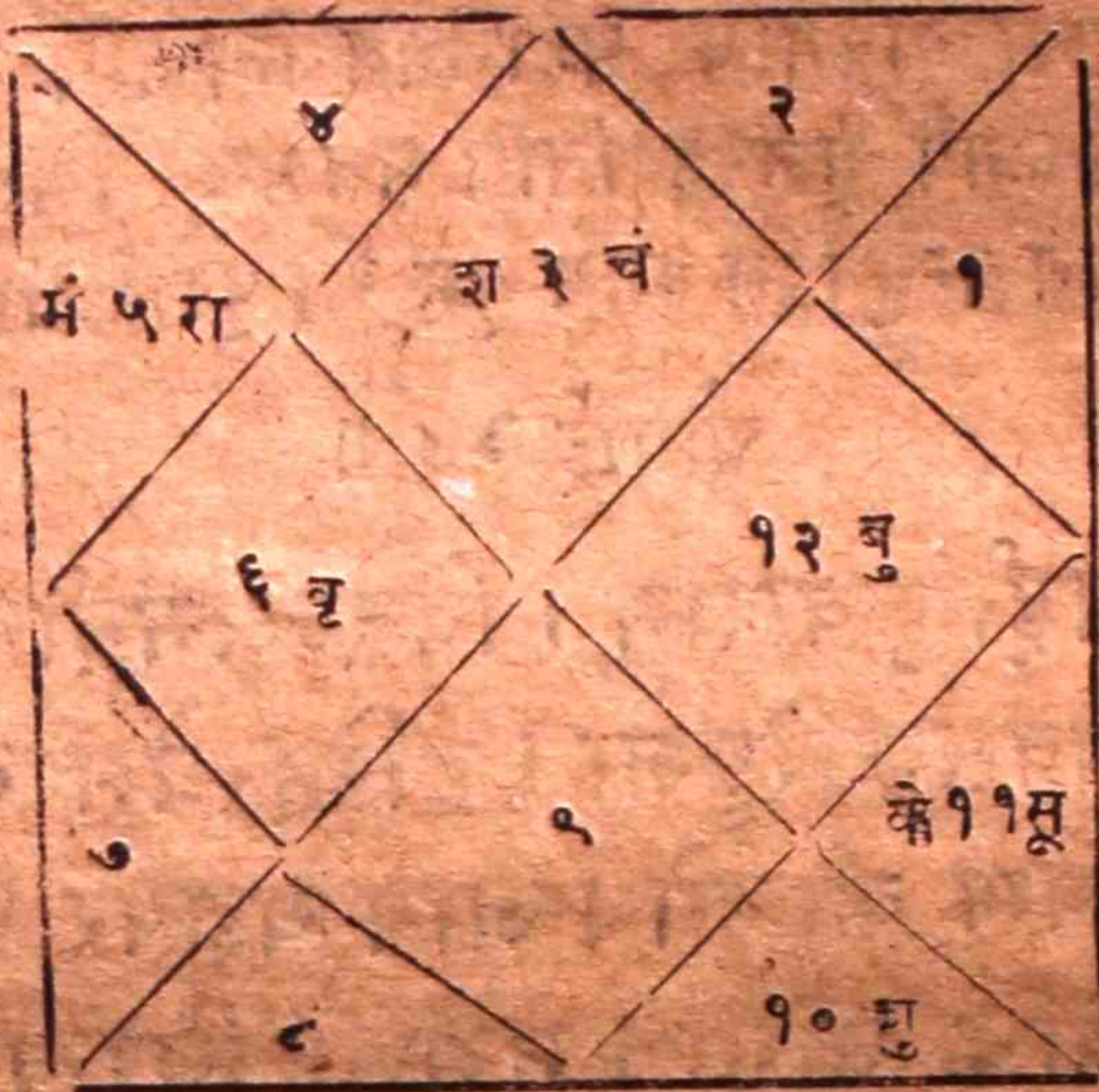
छन्द ४० ॥

नाचहिं अप्सरा मुदितमन नभ सुमनसुर बरसनलगे ।
अगवानविविधिविधानकरि हरिपदपदुमरसमहँपगे ॥
पंडित सबै मिलि हर्षसों अनुसार शुभकरतहिदियो ।
तव मग्नहैबहुभांति सों भगवन्त शिवथापन कियो ॥

दोहा ४१ ॥

सम्बत शैशि ग्रह युँग नयँन फागुन सित शुभमानि ।
मिथुन लग्न दशमी सुभग चन्द्र पुनर्वसु जानि ॥

अथ परमेश्वर वो महादेवजीके स्थापन का
कुण्डलीचक्रम् ॥



चौपाई ४२ ॥

थाप लिंगसहगणकरिभारी । जिमि रामेश्वर राम खरारी ॥
लक्ष्मणअरुसियवररघुबीरा । सहितसुभटहनुमतरणधीरा ॥
प्राण प्रतिष्ठा सों छवि छाजै । रूप मनोहर देखत आजै ॥
यहिविधिहरिहरमंदिरथाप्यो । कीरतिलखिदिग्गजसबकांप्यो ॥
आहुति पूर यज्ञ कर भयऊ । तबबहुदान दिजन कहँ दयऊ ॥
नाना भूषण वस्त्र अनेका । शय्यासहित दियो प्रतिएका ॥
भोजनपुनिबहुविधिदिजकीना । आशिरवाद सदाशुभदीना ॥
शुभकरताविनअनजलपाना । पांचदिवसतककीन्योध्याना ॥

दोहा ॥

ता पाछे भोजन कियो शुभ करता अति स्वच्छ ४३
इन्द्रासन लौं विदित भे भुव मंडल प्रत्यक्ष ॥
वेदरीति अनुसारते दिजन घरयो जो नाम ४४
सो अब भाषों प्रेम सों सुनिये जन तजिकाम ॥

छन्द ४५ ॥

ताहिदिज सब यों पुकारयो मूल जो शुभ ज्ञानके ।
प्राणपति राघो शुभगशुचि सहित कुंवरी पान के ॥

शम्भु जगदीश्वर इवरस्तं युक्त पान कुमारि के ।
नाम कीनो वेदविधि हरि बन्धुसहि त्रिपुरारि के ॥

चौपाई ४६ ॥

जतरू के छत्र विराजै । मोतिनकीलर तामहँ राजै ॥
शोभित शम्भु औरभगवन्ता । मनअस्थिरकरिदेखहुसन्ता ॥
क्रीटमुकुटशोभित शिरभारी । जगमगातहीरनगतिन्यारी ॥
कुरडलभलकतश्रवणनमार्हीं । निरखतनीलमणिहुसंकुचाहीं ॥
वस्त्र अनेक नील तन मोहै । कनकसंगनीलमजिमिसोहै ॥
शोभितसिया लषणतन गोरे । इनसमानकोउनहिंमतिमोरे ॥
कनकमालहियसुन्दरराजत । सबविधिलषणासियासहिभ्राजत ॥
पूजाहोतविविधिविधि नाना । मनइच्छा पुरवाहिंभगवाना ॥

दोहा ४७ ॥

लक्ष्मण सब पहिचानिकै बहु ग्रन्थन अनुसार ।
विश्वबलीश्वरनामधरि हरिकोअधिकविचार ॥

छंद ४८ ॥

विश्वबलि नागेन्द्रमाथ सुनामधरि त्रिपुरारि के ।
बासकीनो भौन में सहि दक्ष राज कुमारि के ॥
विश्वको यहि जक्तलखिकर बली यानापिछानिये ।
शम्भुको नागेन्द्र जानहु नाम तीनों मानिये ॥

चौपाई ४९ ॥

नाम जपै यह हरि शिव केरा । सुखसम्पतितेहिहोयघनेरा ॥
पूजन करहि जो प्रेम लगाई । तेहिकोकछुबुलभनहिंभाई ॥
ध्यानकरै निशि बासर जोई । सबहिपदारथ तेहिजगहोई ॥
जो गंगाजल निजकर लावै । हरिनहान अरुशम्भुचढ़ावै ॥
लेहिस्वर्ग सुखसहि पलिवारा । यमत्रासहि सोहोहिउधारा ॥

भूत प्रेत को संशय नाहीं । धूप देय जो मण्डप माहीं ॥
 नाथसबैविधि तेहि सुखदाता । नाम लेत जो होत प्रभाता ॥
 दुष्टदलन सतजन सुखकारी । हर त्रिशूल हरि चक्रजुधारी ॥

दोहा ५० ॥

जेती प्रभुता आप की शारद शेष न गाय ।
 मैं अतिमतिकेमन्दहों चितबिचजातभुलाय ॥

छन्द ५१ ॥

कीरति तिहारी देखिलागत रेणु जग की थोर हैं ।
 याते सक्यों नहिं गाय प्रभुता सूक्ष्ममति अतिमोर है ॥
 सब भांति दीन दयाल है हरि शिव विनय सुनलीजिये ।
 नाथ दास बिचारि अपनो भक्ति चितबिच दीजिये ॥

इति शम्भुस्थापनसमाचारसम्पूर्णम् ॥



अथ शिवकीर्तनस्तोत्र प्रारम्भः ॥

सवैया ५२ ॥

ब्रह्मकेनाभिसौनीरजभे अरुनीरजसों चतुराननगाई ।
ताहिसोंरुद्रभयोउत्पन्नतो आदिअनादिकिसृष्टिचलाई ॥
कर्मलिरव्योउलटेविधिहै अरुप्राणदियोहरिअंशपठाई ।
देवदत्तजूरुद्रसंहारकरै सुखसेवकको बहुदेतछोहाई ॥

दोहा ५३ ॥

सोइहर परमरूपालहै वासकियो यहिग्राम ।
ताकीबिनती करतहों निशिदिन आठोंयाम ॥

कवित्त ५४ ॥

रावुण से पापीको प्रतापी कियो तपबल कंचनको गदादियो सुन्दरसवारी है ।
कुम्भकरण मेघनाद आदि बलवानभये बहुशूर वीरनको छिनमें पछारीहै ॥
कंस हरनाकुशको बड़े बड़े राज्यभये सेवक तुम्हारे को सदाही सुखभारी है ।
देवदत्त सेवक के सेवक को सेवकहै बिनवत जोरि कर मेरीनाथ पारी है ॥

सवैया ५५ ॥

पापिहुएकमहाप्रबली सोइप्राणतज्योनिजआसनपासा ।
दूतचले यमआयसुपाय दिखायरहे तेहि को बहुत्रासा ॥
पाछेखड़ेगनआपहिकेतेहि मारिकियो निजलोकप्रकासा ।
देवदत्तजूभागिचलेयमकोअरुताहिदियोनिजहीपुरवासा ॥

दोहा ५६ ॥

पूजन शिवको जोकरत मनचितध्यान लगाय ।
सो करि सुख सम्पति सदा अन्त शिवपुरिहि जाय ॥

सवैया ५७ ॥

दक्षप्रजापति यज्ञकियो अरु आदरकै सब देवनमानी ।
एक न मानकियोतुम्हरो तबप्राणतज्योतहँसत्यभवानी ॥
भैरवमानितिहारहिबातको कोटिनभांतिसोंयज्ञनशानी ।
देवन आयकियो बिनती तबपूरणयज्ञ भयो प्रणठानी ॥

दोहा ५८ ॥

बकरको शिर काटिकर धर्यो दक्ष के साथ ।
दीनदयाल कृपाकियो प्राणदियो तेहि साथ ॥

सवैया ५९ ॥

दैत्यभयो त्रिपुराप्रवली सोइ देवनको दुखदै अतिभारी ।
पापकरै क्षिति औ नभमें सबजीव चराचरहोत दुखारी ॥
देवनकी विनती सुनिकै देवदत्तमनै मन लीन विचारी ।
काढि त्रिशूलहत्यो तेहिको तबहीं तुमनामभयो त्रिपुरारी ॥

दोहा ६० ॥

देवनको सब दुखहरयो रह्यो विष्णु पद प्रेम ।
वैसहि दुख मेरो हरो विनवतुहौं करि नेम ॥

कवित्त ६१ ॥

सतीजीको शंकरहू क्रोधकरियागिदियो जायबनबीचहूम ध्यानको लगाईह ।
प्रकटहवै गणपतिचौकी दिनरयनकरै सिंहऔ मतंगनको बाण से हटाई है ॥
बाहनलैआयो शम्भु सतीके मिलापहेतु गणपतिको पकरि युद्धको मचाईहै ।
काटिशिर तुही राहबीच से हटायदीनो जायसती पास यहबातको सुनाईहै ॥

दोहा ६२ ॥

गणपति बधसुनि बिकलहै सती गई मुरझाय ।
तुमहीं गजशिर काटिकर दीन्यो प्राण बसाय ॥

कवित्त ६३ ॥

विष्णुपद पंकजसे प्रकटहवै गंगभई विधिके कमण्डल में आइकै समाई हैं ।
विनय भगीरथ सुनतही जटामेलीनो भूलीं जटाबीच जटाशंकरी कहाईहैं ॥
दीनोगारि जटासे पसारकीनो धारातीनद्वारा वैकुण्ठको कराराबीचआईहैं ।
देवदत्त गंगाजी तुम्हारही प्रतापनसों करतहहास अति द्वन्दको मचाई हैं ॥

दोहा ६४ ॥

सेवकके सुखहेतु कहैं कीनो विविधि उपाय ।
लोहित जटा दयालहोइ देहुभक्ति सुखदाय ॥

कवित्त ६५ ॥

एकमहापातकीकोकर्मविधिलिख्यो नही शम्भुशरणगयेतासुकर्मलिखिदीनाहै ।
विष्णुजीनिराखिकर चित्तमेंवचारिरहेव विधिहूबिलोकिमनकरतेमलीनाहै ॥
लिखीमेरेबातनको शिवजीमिटायदीनो शरणगयेदुष्टमहाताकोदुखछीनाहै ।
नाथसबयुग में शरणगत लाजकीनो देवदत्त काज आज देरकाहेकीनाहै ॥

दोहा ६६ ॥

कर्मलिखोफलटारिकै निजलिखिसबफलदीन ।
ऐसो पारस पायकै सदा करो मन लीन ॥

सवैया ६७ ॥

शापदियो ऋषिगौतमने सुरनायकको भगुभैबहुतेरो ।
लाजनसोंबहुशोचिरह्यो नहिं इन्द्रपुरीमहँलीनबसेरो ॥
कीनकृपाजबआपुहिने तब नयनसहस्रभयो भगुकेरो ।
हौ सबलायकहेदेवादि सुखादिकरो करिकैनिजफेरो ॥

दोहा ६८ ॥

अमरराजकहँसुखदियो अतिहितभयो कृपाल ।
मैं बिनवतुहौं जोरिकर जल्दी होउ दयाल ॥

सवैया ६९ ॥

पुष्पकोबाणलियेकुसुमायुध मारिसवै जगकीन व्यहाला ।
धायरह्योक्षितिऔनभमें डरिजातसवै लाखिभेषकराला ॥
आयरह्योजबहीं तुम्हरेढिग छायरह्यो तेहिके शिरकाला ।
युद्धकियो देवदत्तजबै तन जारिकै छारकियो ततकाला ॥

दोहा ७० ॥

तप व्रत सती विचारि मन देव विनय जब कीन ।
रति विलाप सुनि तबहिं तुम मदन अमर कै दीन ॥

कवित्त ७१ ॥

भुवलोक महालोक जनलोक स्वर्गलोक तपलोक ससलोक भूमिलोक कलमें ।
देवदत्त भाषत है सुतल रसातल में बितल में अतल में मञ्जु महातलमें ॥

वैसही तलातल पताल औ अचल चल बसतुहैं जीव जेत खंडन सकलमें ।
मुंडमाल गरबीच करमें त्रिशूल लिये बैल नादियापै चढ़िजात तहां पलमें ॥

दोहा ७२ ॥

कुश जम्बू प्रलक्ष लौं शाक्य शालमल ठाम ।
पुष्कल कौचहु आदिलौं जपहिं तुम्हारो नाम ॥

कवित्त ७३ ॥

वरुण कुबेर यमराज इन्द्र मारुतहैं ईश औ गोविंद अग्नि राक्षस बतावते ।
गरुडध्वज अ दिकलौं एते दिगपाल कहौं आपहीकी कीरतिको नितसोइगावते ॥
पुण्डरीक वामन औ कुमुद प्रतीक कहौं सार्वभौम पुष्पदंत अंजन सुनावते ।
देवदत्त रावत ए दिग्गज के नाम कहौं सोउ पद पंकज तुम्हारे चित लावते ॥

दोहा ७४ ॥

हेमन सुमिरण करुसदा सबफल उत्पति होय ।
शंकर अरु श्रीराममहैं भेद नहीं है दोय ॥

कवित्त ७५ ॥

धर्म के हेतुन को जनहिं सुधाम दियो पाप तौन गिनै नहिं ऐसो धन पाइकै ।
पान करै मच्छरीको मदिराको मानकरै जीवनको प्राण हरै शरणमें आइकै ॥
घोरनरक लक्षणहै दुष्ट महापातकी न दियो स्वर्ग शरण गये दोषहु गंवाइकै ।
देवदत्त आशहै तिहार पद पंकजको भक्ति मोहिं देहुनाथ प्रेम सौं छोहाइकै ॥

दोहा ७६ ॥

नाम तुम्हारो जपतहौं तजिईर्षा मद मोह ।
दीनानाथ दयाल होइ करोदीन पर छोह ॥

सवैया ७७ ॥

अमृत शंख एरावत भै मणि वैदधन्वन्तर औ विषगाई ।
वृक्षहु कल्पमयकभयो मदिराधनु श्यामकेकरण सुहाई ॥
हरिप्रेमप्रियाअरुकामकेधेनुकोविश्वकेअन्तअकारबढ़ाई ।
चौदह रत्न भयो सब ये देवदत्त जबैहरि सिंधु मथाई ॥

दोहा ७८ ॥

नील वरण विषपानकरि बैठ्यो हरिके ठाम ।

कण्ठबीचसो रहिगयो नीलकण्ठभयो नाम ॥

कवित्त ७९ ॥

सांपनकी कण्ठमालसांपहीकोकुंडल है सांपैजटाबीच शिरसांपही को पागहै ।
सांपहीको आड़बन्दसांपही लंगोटसोहैसांपनको कंगनअरुसांपहीसो लामहै ॥
गोड़नमें सांपै सब रोम रोम छायरहे औरों सब अंगनमो बड़े बड़े नागहैं ।
सांप अहैं डमरु में सांपही त्रिशूलनमें देवदत्त अंग बीच अर्धको विभागहै ॥

दोहा ८० ॥

नागन को संग्रह कियो नागइन्द्र भयो नाम ।

भूत प्रेत को संग है अंग व्याघ्र को चाम ॥

सवैया ८१ ॥

तारकपुत्र अहै कमलाक्ष कटाक्ष बड़ो अरुविन्दुन माली ।
तारकअक्षकियोअतियुद्धकोछाड़रह्योचितमोभ्रमजाली ॥
नाश कियो सिंगरेपुरको अतिक्रोधहुसे निजशूलनशाली ।
देवदत्तकहैं सबशंकहरयो तुमजीवचराचरदेखिव्यहाली ॥

दोहा ८२ ॥

दैत्य देव दानव सबै किन्नर औ गन्धर्व ।

सिद्धयक्ष विद्याधरहु पूजततुमकहैं सर्व ॥

सवैया ८३ ॥

और जलंधर दैत्यभयोसोइ शम्भुदया सों महाबलपायो ।
देवनको सिंगरे दुखदीनेउ इन्द्र कुबेरहु आदि सतायो ॥
जीति सबैतिहरेढिगगै बहुभांतिनसों अतिगर्व दिखायो ।
पद अम्बुजसोंरचिचक्रसुदर्शन सिंधुकेबीचमोलेनपठायो ॥

दोहा ८४ ॥

ताकहैं बल ममता भयो गयो सिंधुके बीच ।

चक्र सुदर्शन कंध धरि मरयो आप सों नीच ॥

सवैया ८५ ॥

दैत्यभयो अंधकासुरघोर सोऊसब देवन त्रास दिखाई ।

देखि दुखी सबही जनको ततहीक्षण आपने कीन उपाई ॥
 युद्धकियो तेहि दुष्टहिसों अरुमारि त्रिशूलपै लीन उठाई ।
 देवदत्तजू शंकगयो सबकोबरषाकरि पुष्पको प्रेमछोहाई ॥

दोहा ८६ ॥

दीनपुकारथो दैत्य जब तब फिर भयो कृपाल ।
 चरणलीनकरिगणकियो त्यागिदियोभ्रमजाल ॥

सवैया ८७ ॥

काल प्रलयमहँ बिष्णु विरंचिसों बाढो बिरुद्धहै आपसमाहीं ।
 सृष्टिको कारज भूलिगयो अरुमाखहिमो दिन बीततजाहीं ॥
 कल्लह दोष मिटावन हेतुको लिंगप्रख्यात भयो वहि ठाहीं ।
 कोटिन अग्निनों तेजबढ़ेउ नभ औ क्षिति जाकर अंतहैनहीं ॥

दोहा ८८ ॥

लिंग महातम भयो तब मित्यो बिष्णु विधि क्षोभ ।
 पूजत सुर नर तबहिं सों त्यागि जाल भ्रम लोभ ॥

सवैया ८९ ॥

वर्ष सहस्र मिलाय कियो तप देह सबै महँ दीमक छाई ।
 देखि महातप फेरि दियो कर स्वर्ण से सुन्दर देह बनाई ॥
 अस्तुति कीन तुम्हारि अनेकन मांगिलियो वर यों हरषाई ।
 सुन्दरता अरु आयु तिहारहि पुत्र हमैं प्रकटै यक आई ॥

दोहा ९० ॥

एवमस्तु तबतुम कहैउ नन्दी नाम सुनाय ।
 निजशरीर धारणकियो तेहिके गृहमो जाय ॥

चौपाई ९१ ॥

सोइनन्दहिनिजगतिहरदीना । चरणकमलमहँरहतसेलीना ॥
 जोजेहिइच्छा सुमिरण कीना । ताको तैसइ तुम फलदीना ॥

कवित्त ९२ ॥

गंगालिये जटाबीच पीवत है घोटि भंग गौरी अर्द्धग संग कीरति पसारे है ।
मुण्डमाल गरबीच आंदेतन व्याघ्रखाल चन्द्रअग्नि बसैभाल वेदनउचारे है ॥
मतिलघु मेरीनाथ कीरति तिहारी बहु शारद मुखनसों न करते पंवारे है !
देवदत्त समापातकीन कांकहालै कहौ जेतै तू उचारे मेघबुंद नाहि डारे है ॥

दोहा ९३ ॥

अधमहुंमें अति अधमहुं बलबुधि में अति मन्द ।
नाथ त्यागि सब दोषको हरो सकल दुखद्वंद ॥

सवैया ९४ ॥

वास कियो कैलास के ऊपर संग लिये गिरिराज कुमारी ।
सिद्धि सबै अरु निद्विखडे ठिग आरति लै कर कंचनथारी ॥
वेद व शास्त्र को संयुत है दशसोऊ रहै तुम्हरे अनुसारी ।
देवदत्तपै होउदयालसदा शिवभांतिन सों सबदीन विचारी ॥

दोहा ९५ ॥

सबविधि राखतहौंसदा नाथ तिहारो आश ।
भावतकछु दूजो नहीं हियविचकरो प्रकाश ॥

सवैया ९६ ॥

पूजत हौं शिर मानि तुम्हें नित अक्षत अर्क धतूर चढ़ाई ।
राखोंभरोस सदाही कृपानिधि पातक जानि न देवभुलाई ॥
आछत ही तुम्हरे हरजू अब औरनकी नहिं देऊँ दोहाई ।
लाजकरो निज नामहि को देवदत्तजू हौं शरणागत आई ॥

दोहा ९७ ॥

हौं अपराधी भांतिबहु हर अपराध न लेहु ।
राखि बड़ाई आपनी भक्ति एक चितदेहु ॥

सवैया ९८ ॥

मंत्र नहीं कह्यु आवत है अरु योग औ जाप न आवतनीको ।
 दिन रैनचितैचित आवत जातपै लागिगईतुमनामकोलीको ॥
 आशलग्यो पदपंकज में अरु दूजो नहीं कह्यु भावत जीको ।
 शंकर आप सहाय करो देवदत्तजू दोष को जानहु फीको ॥

दोहा ९९ ॥

सतयुग त्रेता आदिमहँ जल्दी भयो सहाय ।
 अब कलियुगमें हेतुकेहि शंकरदेरलगाय ॥

चन्द्रकला १०० ॥

विधु शोभित भालालिलाट इतै उतही मुखचन्द्र प्रभाचमकै ।
 मरकै मृगराजकी खाल इतै उतही चुनरीकोभवा भ्रमकै ॥
 गमकै इत चन्द्र कपूरनसों उतही अम दामिनिसों दमकै ।
 देवदत्त कहै प्रभु शम्भुशिवा तुम काटहु फंद महा यमकै ॥

१०१ ॥

दमकै शिरदामिनि जूटजटा उतज्योति महानगकी गनकै ।
 मनकै जुभुअंगम अंगविषे उनकी कट किंकिनिसों भ्रमकै ॥
 बैल पुरानजु बोल इतै उतही ध्वज सिंहनि सों ठनकै ।
 देवदत्त कहै सब हेतुनसों तुम राखत मान सदा जनकै ॥

सवैया १०२ ॥

नयन भयो बहु अंधन को पगुदीन तुम्हीं शिवपंगुहि काहीं ।
 कुष्ट शरीरहि अक्षकियो सब दुःख तुम्हारे निरेखत जाहीं ॥
 पुत्रनहीं विन पुत्र विचारिकै ताहि सपुत्र दियो क्षण माहीं ।
 देवदत्त पुकारतआरत सों प्रभुरूपनिजै प्रगटचोकिमि नाहीं ॥

सवैया १०३ ॥

सुन्दर सुखदियो निजसेवक भांति अनेक तुम्हीं त्रिपुरारी ।

शंक हस्यो सब बातनको जवनाम शिवा शिव लीन पुकारी ॥
बैलसवार भयो तवहीं छिन में हरकीनेहु जाय गोहारी ।
देवदत्तजू देरभईबहुतै सुनिये अब हे प्रभु टेर हमारी ॥

इति शिवजीकी कीर्ति स्तोत्र समाप्तम् ॥

अथ भगवान् स्तोत्र प्रारम्भः ॥

सवैया १०४ ॥

कालप्रलय महुँक्षीरमो बास कियो सहिसिंधु सुतासुकुमारी ।
नाभि तुम्हारि से पंकजभै देवदत्त जू तासों भयो मुखचारी ॥
सोई रच्यो सबजीवनको नितही प्रभु आपुहिके अनुसारी ।
हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथ करो अब हाथपसारी १

१०५ ॥

दैत्यहिणाक्षभयो प्रबली क्षितिको सबभांति दियोदुखभारी ।
लैगयो ताहि पतालहि मों मलको करि संयुत कोटसवाँरी ॥
कीन कृपा देवदत्तजबै धरि शूकर रूप लियो है उबारी ।
हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथकरो अब हाथपसारी २

१०६ ॥

यकपुत्रभयो हरनाकुशके प्रह्लादजपै दिनरैनि खरारी ।
तासु छुड़ावन को देवदत्तजू खंगलिये नृप त्रासतभारी ॥
मारन दुष्ट उबारन सेवक रूपधर्यो नरसिंह विचारी ।
हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथकरो अब हाथपसारी ३

१०७ ॥

धरि बामनरूप छल्योवलिकोतेहिदानकागर्वभयो जबभारी ।
अर्धशरीरहिं नापिलियो तुमदीन सोऊबचनै नहिंटारी ॥

जानि सदा प्रभुप्रीति निजै देवदत्तजू तासु सबै विधितारी ।
हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथकरो अब हाथपसारी ४

१०८ ॥

पाप कियो क्षिति क्षत्रि जबै तब रूपधरयो प्रशुराम खरारी ।
क्षत्रिन को बहुनाश भयो देवदत्तजू पर्शु लियो कर भारी ॥
ताहिदियो निजलोकको बास जप्यो धारिध्यान चहैरणधारी ।
हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथ करो अब हाथ पसारी ५

१०९ ॥

औध नृपैगृह जन्मलियो पुरतारि दियो सिंगरो नर नारी ।
पूरब पुण्य विचारि बचै कहवायो तुम्हीं हरि औध विहारी ॥
ताडुक राक्षस तारि दियो देवदत्तजू ना कलु पाप विचारी ।
हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथ करो अब हाथ पसारी ६

११० ॥

शापहुके वश है क्षण में सुपषाण भई ऋषि गौतम नारी ।
बीतिगयो बहुतेदिन यों जब कौशिक के सँग जात खरारी ॥
तारि दियो पग के परतै देवदत्त गई सब दुःख विसारी ।
हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथ करो अब हाथ पसारी ७

१११ ॥

मिथिलापुरमों धनुटूटनको जब यज्ञस्वयम्बर भै अतिभारी ।
देशन के सिंगरे नृप आथहु टूटेहु ना सब गै बल हारी ॥
शोच लख्यो सियको देवदत्तजू तोरतहू न लगायहु बारी ।
हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथ करो अब हाथ पसारी ८

११२ ॥

मिथिलेशके शोच निवारणकै अरु तारिदियो पुरकेनरनारी ।
मानकियो निजनामहिंको जो निरोखिसखी सबगावतगारी ॥
व्याह भयो पुर एकहि मों देवदत्त कृपा तुम बन्धु न चारी ।
हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथ करो अब हाथ पसारी ९

११३ ॥

सेवक के सुखहेतुन को सब राज्य व काजकि सुद्धि विसारी ।
आयसुमानि चल्यो पितुको संगबन्धुलिये मिथिलेशकुमारी ॥
राह धरयो बनको तुमहीं देवदत्त जू योग कियो तन धारी ।
हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथ करो अब हाथपसारी १०

११४ ॥

पितुप्राणतजेकरशोच कियोनहिं मानरख्यो बचकोबड़भारी ।
केवटको प्रभु तारि दियो जब नाव चढ़ाय कै पार उतारी ॥
देवदत्त कुलै सहि पातक तारेहु लीन जबै पद पद्म पखारी ।
हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथ करो अब हाथपसारी ११

११५ ॥

आयो जबै मिथिलेश मनावन मान्योनहीं बचनै प्रभु टारी ।
बन्धु लियो तुम्हरो पदपादुक ताहि सबैविधि राज्यविचारी ॥
देवन कष्ट निवारण को देवदत्त तुम्हीं सब शोच विसारी ।
हे रघुनाथ अनाथके नाथ सनाथ करो अब हाथ पसारी १२

११६ ॥

तारि उबारि दियो सेवरी कहँ ताको जबैफल दीनो जुठारी ।
भेटकियो सुत मारुत सों अरु बालिहत्यो तेहि बन्धुउबारी ॥
अंगदको प्रभु संग लियो देवदत्त सबै विधि दीन विचारी ।
हे रघुनाथ अनाथके नाथ सनाथकरो अबहाथ पसारी १३

११७ ॥

हेत सिया प्रभु पक्षि जटाइहि रावण से अतिही रणधारी ।
जानि सबैविधि हार दशानन काटि दियोपख लै तरवारी ॥
देवदत्त कृपाजब आपकियोसोइत्यागितनैगयो स्वर्गमभारी ॥
हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथकरो अबहाथपसारी १४

११८ ॥

भेजदियो हनुमंतहि को सोइ जाय महापुर लंकहि जारी ।
 दास विचार कियो देवदत्तजू भक्तविभीषण लीन उबारी ॥
 दुष्टहत्यो सिय हाललियो तुमरेहि कृपा से भयो बल भारी ।
 हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथकरो अबहाथपसारी १५

११९ ॥

रावण बैर कियो जबहीं तब घोरभयो बहु बाणन भारी ।
 देवदत्त विभीषण राज्य दियो अरु दुष्टसबै पुरको प्रभुमारी ॥
 देवनको दुख छीन्यो तुम्हीं सियसंग लिये पुरको पगुधारी ।
 हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथकरो अबहाथपसारी १६

१२० ॥

जीति सबै पुर औधहि आयहु हर्षभयो पुरवासिन भारी ।
 देवदत्त सखीसब मंगल गावत आरति लै कर कंचन थारी ॥
 राजकियो अरु सुखदियो तुमहीं सिंगरे जनको अधिकारी ।
 हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथकरो अबहाथपसारी १७

१२१ ॥

भक्त अजामिल तारिदियो गनिकासोड पापिनको प्रभुतारी ।
 भारतमें भरदूल बचायहु ग्राहसों लीन्यो गजेन्द्र उबारी ॥
 सेवक कष्ट विचारतुम्हीं देवदत्त सबैविधि कीन गोहारी ।
 हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथकरो अबहाथपसारी १८

१२२ ॥

कोपकियो ब्रजपै जब कंसने गोपिन को दुख भै अति भारी ।
 देवदत्त जबै करजोरि पुकारेहु आयतभी प्रभुकीन्योगोहारी ॥
 इन्द्रजू कोप कियो जबहीं तबहीं कर पै गिरिको तुम धारी ।
 हे रघुनाथ अनाथ के नाथ सनाथकरो अबहाथपसारी १९

॥ १२३ ॥

भक्त सुदामा दरिद्रहुको प्रभु राज्यदियो मुख तंदुल डारी ।
कंससमा सब दुष्टनको तुम स्वर्ग पठायो निजै कर मारी ॥
देवदत्तजू रासकियो सँग गोपिन दै सिंगरोसुख भावविचारी ।
हे रघुनाथ अनाथके नाथ सनाथकरो अब हाथ पसारी २०

॥ १२४ ॥

मेवातज्यो दुर्योधन के गृह मान रख्यो नहिं प्रेम निहारी ।
भक्तके सागको स्वादलियो जब प्रेमकियो अतिदीनपुकारी ॥
देवदत्त कहाँलौं कहौं प्रभुता तुमहीं जनको सबकष्ट निवारी ।
हे रघुनाथ अनाथके नाथ सनाथ करो अब हाथ पसारी २१

॥ १२५ ॥

जायसभावचलाजरख्यो जबरुक्मिणिशोचकियोजियभारी ।
देवदत्तजू दांव विचारि सबैविधि खैंचत अंग बढ़ायहुसारी ॥
लै रथबीच स्वयम्बर से तुमहीं तबहीं तेहि लायो सुरारी ।
हे रघुनाथ अनाथके नाथ सनाथकरो अब हाथ पसारी २२

॥ १२६ ॥

वरदान दियो भस्मासुरको हर शीशधरो कर सो तनजारी ।
देवदत्तजू लालच कीन सतीकर और जरावनको त्रिपुरारी ॥
रूपसती को कियो तुमहीं प्रभु राक्षस गै कर मस्तकधारी ।
हे रघुनाथ अनाथके नाथ सनाथ करो अब हाथ पसारी २३

॥ १२७ ॥

क्षीरसमुद्र मथायो जभी तो लियो मदको अरु अमृतगारी ।
मोहनिरूप भरयो तुमहीं मद राक्षस अमृत देवन टारी ॥
देवदत्त विरोध छुड़ाय दुहंकर लीन तुम्हीं हरि सिंधुकुमारी ।
हे रघुनाथ अनाथके नाथ सनाथ करो अब हाथ पसारी २४

१२८ ॥

इन्द्र कुबेरहु आदिकलों दिन रयन जपैं हर औ मुखचारी ।
 नारद शारद की प्रभुताकरि मानकियो गजमस्तक धारी ॥
 टेरतही सब के प्रकटयो देवदत्तजू बेरहि पाप विचारी ।
 हे रघुनाथ अनाथके नाथ सनाथ करो अब हाथ पसारी २५

१२९ ॥

बक्र भयो प्रभु चक्रकिधार कि संग छुटयो कहिसिंधुकुमारी ।
 टूटि गयो पख बाहनको कि परयोकेहिं सेवक के वशभारी ॥
 देवदत्त पुकारत देरभई केहि कारण नाथ लगावहु बारी ।
 हे रघुनाथ अनाथके नाथ सनाथकरो अब हाथ पसारी २६

१३० ॥

शाम सुबै अधरात्रि मध्याह्न जपौं तुमको धरिध्यान खरारी ।
 बैठतहु उठतो यशगावहुं कीरति जौन कियो असुरारी ॥
 देवदत्तजू स्वप्न दियोनहिं सोवतरूपतिहारे कि आशहमारी ।
 हे रघुनाथ अनाथके नाथ सनाथकरो अब हाथपसारी २७

१३१ ॥

नेम न प्रेम न धीरज धर्म न ज्ञान को कर्म अहै गिरिधारी ।
 दानदया नहिं है चितमें अरु कीन नहीं कछु तीरथभारी ॥
 देवदत्तजू आश तिहारो हमैं सब संकटको हरु दीनविचारी ।
 हे रघुनाथ अनाथके नाथ सनाथ करो अब हाथपसारी २८

१३२ ॥

आदर राखहिं विप्रन को नितदान दया उरमाहिं विचारी ।
 वेद पुराण पै ध्यान धरैं देवदत्तजू है परके उपकारी ॥
 पाठ करैं नख अष्ट कवित्त को औरहु प्रेम बड़ावहिं भारी ।
 लोक चतुर्दशमें सुख जो तेहि देहिं रुपाकरिभौधविहारी २९

अथ हनुमान्स्तोत्रप्रारंभः ॥

कवित्त १३३ ॥

अंजनि के ओद्रमें जनम लियो जेहिक्षण तेहिक्षण जाय नभकीराति पसारी है ।
देवनको पीर बहुभांति सों विचारयो मनजब पवनपूत तुम बालापन धारी है ॥
बालिहि बंधायो देवदत्त सुर सुत हेतु अतिविकराल दुखदीन सों बिसारी है ।
सेवककी पीरताको अब महावीरहरो तब सब भांतिन सों बीरता तुम्हारी है १

१३४ ॥

लांघ्यो है समुद्र तुम रामकाज हेतु कहं गयो लंकबीचबनबाटिका उजारी है ।
शोचहरयो सियकर मुंदरी दिखाय नाथ राक्षस अनेकअरु अक्षको संहारी है ॥
देवदत्त योधनसों अतिही लराई करि जायसभा रावणके स्वर्ण पुर जारी है ।
सेवककी पीरताको अबमहावीर हरो तबसब भांतिन सों बीरता तुम्हारी है २

१३५ ॥

हालदियो रामकहं लंकपै पयानकियो कुंभकरण रावणादि योधामदभारी है ।
इन्द्रजी तबानजबलाग्योतनलक्ष्मण तुम कालनेममारिगिरिराजको उखारी है ॥
तुमहीं सुखेन वैद्य लायो गढ़लंकसन देवदत्त औषधिके देत प्राणधारी है ।
सेवककी पीर ताको अब महावीर हरो तबसब भांतिन सों बीरता तुम्हारी है ३

१३६ ॥

जबऔधराज सुत लैगयो पतालमहं तब तुम फारिभूमि बन्धुन उवारी है ।
कंधपै चढ़ाय निजसुतकहं राज्यकरि जाय पुर साहि आहिरावण को मारी है ॥
देवदत्त नाथकाज तनिक न देरकीनो बड़े शूरबीरनको छिन में पछारी है ।
सेवककी पीर ताको अब महावीरहरो तब सब भांतिन सों बीरता तुम्हारी है ४

१३७ ॥

सिंधुके बंधावनको ईश पग दीन जबै बड़े बड़े शैलन उखारि तुम डारी है ।
जब महाभारथभो पारथ पयान कियोतब तुम कौरवआदि योधन संहारी है ॥
देवदत्तरामके विरोधी जौनभये भूमिताको तुम जाय बहुविधिसों बिदारी है ।
सेवककी पीर ताको अब महावीर हरो तब सबभांतिनसों बीरता तुम्हारी है ५

१३८ ॥

भूत प्रेत भागि जातनामही सुनत खन दुखदूरिहोत अति प्रेम जो पुकारी है ।
बुद्धि अरु ज्ञाननकेनाथ तुमदेनहार ऋद्धि सिद्धिआदिक तुम्हारे अनुसारी है ॥

वेदनमें देवसब युगनलों गायरहे देवदत्त कीरति जो सब सुखकारी है ।
सेवककी पीरताको अबमहावीरहरो तबसब भांतिनसोंवीरता तुम्हारी है ६

१३९ ॥

रामके वियोगमहं बूढ़त भरत जब शुभ हालदीनो प्रभु अति सुखकारी है ।
मातु आदिपुरके निवासिनकोसुख दियोआरतिसंवारिकर कंचनकीथारी है ॥
कीरति दिखाय देवदत्त सियरामसन लीनो वरमांगि ज्ञान दृष्टिबलभारी है ।
सेवककी पीरताको अबमहावीरहरो तबसब भांतिनसोंवीरता तुम्हारी है ७

१० ॥

अवधमें राजितहौ नाथ तनधरि निज देवनको आश दिन रैनहं तिहारी है ।
दासन पुकार जबपरचोहै श्रवण बिच ततक्षणगयोतासु दीनताविचारी है ॥
तुलसी के मन महं देवदत्त बसिकरगभुहि दिखायोसोइ प्रेमसों निहारी है ।
सेवककी पीरताको अबमहावीरहरो तबसब भांतिनसोंवीरता तुम्हारी है ८

दोहा १४१ ॥

दुःखहोय कछु बातकी करै सो नित यह पाठ ।
सुःख देहिं हनुमान तेहिपढ़े कवित्त के आठ ॥

अथ रागबिलावल १४२ ॥

राम सिया सुन्दर जोरीवर सबविधि पूरण आजभयोरी
प्रेमप्रसोद उदधि उमंगतउर पुरबासिन हिय ध्यान दयोरी ॥
रुचिरअंटारिन नारिनिरेखत रामरूपतन मनहिं लयोरी १ ॥
जनकपुरी दशरथ नृप आयो गजरथ साज्यो और हयोरी ।
देखि देखि बरांत अतिभारी दिग्गज के उर शंकगयोरी २ ॥
कांपत शेष पतालपुरी महँ जब अगुआन समान कियोरी ।
द्वारकोचार होतजेहिऔसर नभसुर वर्षत सुमन नयोरी ३ ॥
देवदत्त सब मगन प्रेमसों बूंद अमी बहुभांति पियोरी ।
मन वाचा सिंगरो पुर पूज्यो सुर मुनि कीनो कारजयोरी ४ ॥

रागबिलावल १४३ ॥

धन्यधन्यब्रजभूमि सखीरी धनिधनि राधाकृष्णकि जोरी ।
नाम लेत प्रह्लाद तरचो जो गनिका गीधअजामिल सोरी ॥

इन्द्र आदिकोशरण दियोजोसोहरि नाचतमिलिब्रजगोरी १ ॥
 रावणादि अरु बालि हत्यो जो कंस सहित बहु दुष्टनकोरी ।
 दधि हेतुनसोइगृहगृह आवत ग्वालसंगधावत ब्रजखोरी २ ॥
 जनकपुरी महँनिरखि निरखिछबि सीयशोच जेहिहेतुपरोरी ।
 रुक्मिणि द्विजकरपत्रभेजायो सोअवगोपिन कंठमिलोरी ३ ॥
 देवदत्त आनन्द मगन मन नदि यमुना तट रासरचोरी ।
 वैसहिआश पूरकरुजनको ग्वालसखाजिमिमिलेहुगरोरी ४ ॥

अथ रागसारंग १४४ ॥

होमन शम्भु शरण सुख कारी ॥ अद्धि सिद्धिके देनहारहैं
 भक्ति देहिं उरभारी । लोक चतुर्दश की सुख सम्पति देत
 शम्भु बचहारी १ ॥ कैलास शिखर पर बास अहै जहँ रहत
 मलय बहुभारी । मुण्डमाल गरसर्प लिये संग राजित दक्ष
 कुमारी २ ॥ नारदादि नितहीयशगावत करडमरू धुधकारी ।
 शेष शारदा अन्तनपावहिं कीरतिजोत्रिपुरारी ३ ॥ देवदत्तसब
 रूप निरखिकर तन मन गै बलिहारी । सुन्दरनाथ तिहारिहि
 मूरति बूढ़हि बैलसवारी ४ ॥

रागसारंग १४५ ॥

हे शिव भक्ति देहु निजभारी ॥ चरण रेणुकी आश नितै
 है सुनिये अरज हमारी । जिमि चातकको आश स्वातिकर
 वैसहि मोहिं तिहारी १ ॥ मानुषतन यह मूल पापको बिन
 बहूंदीनपुकारी । करहुनाथ निज नाम बड़ाई पाप न कछु
 चितधारी २ ॥ हौं अनाथ कोउ संग न साथी तुमहीं हौं त्रि-
 पुरारी । मोहिंगरीब बिचारिसबै विधिकष्टहिदेव निवारी ३ ॥
 देवदत्त तुम्हरे सब जनकहँ सुख सम्पति अधिकारी । मैं सेवक
 को सेवकहरहूँ दीनन दीन बिचारी ४ ॥

ज्ञानदीपका ।

३०

१४३ ॥

ज्ञानदीपका ज्ञानकी पढ़ै सुनै चित लाय ।
भक्तिहोयहरिहरचरणसुखसम्पतिअधिकाय ॥

१४७ ॥

बुधजनसोंयहविनयहैतजिइर्षाअभिमान ।
सबविधिग्रंथविचारिकैक्षमहिंमोरअज्ञान ॥

१४८ ॥

दत्त श्री ममनाम है पितानाम संग्राम ।
रविबंशी श्रिनेतकुलबसतरुधौलीग्राम ॥

१४९ ॥

मध्यजिलाबस्तीकहौं बांसी राज्यप्रधान ।
शुभगजहां यह ग्रामहै जहां ग्रंथअनुमान ॥

१५० ॥

ग्रंथनिरखिवुधलोगसब हियबिचअतिहर्षाहिं ।
हीनबुद्धिनरनीच जो संशयकरहिं सदाहिं ॥

१५१ ॥

सम्बतक्षितिगुणवेदशर कारशुक्लशुभपक्ष ।
देवदत्त रचि ग्रंथ को कियो जक्त प्रत्यक्ष ॥

इति ज्ञानदीपका देवदत्तकृत समाप्तम् ॥

लखनऊ मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी ॥

जनवरी सन् १८८९ ई० ॥

५-काव्य भाषा ॥

इफीजुल्लाखां का हजारा बातसवीर, सूरसागर, रसिकप्रिया, काव्यकल्पद्रुम, कृष्णसागर, विश्रामसागर, प्रेमसागर, कृष्णप्रिया, नवीनसंग्रह, शृंगारसंग्रह, हरिप्रबोधनी, आनन्दसागर, विजयमुक्तावली, गोवर्द्धनविलास इत्यादि ॥

६-राग ॥

रागप्रकाश, लावनी, रागसंग्रह, भजनमाला, श्रीकृष्णगीतावली, नवरत्नभाष्य, वीणाप्रकाश, तर्जुमह कानूनसितार इत्यादि ॥

७-कहानी ॥

नानार्थसंग्रहावली, शिवसिंहसरोज, भक्तमाल राजा प्रतापसिंह, भक्तमाल नाभाजी, इन्द्रसभा, बैतालपच्चीसी, सिंहासनचत्तीसी, विक्रमाविलास, शुकबहत्तरी, बकावलीसुमन, चहारदरवेश, बागवहार, किस्साहातिमताई, अपूर्वकथा चल्था फिसानाअजायब, सहस्ररजनीचरित्र चल्था अलिफलैला, शाहनामा मै तसवीर, पद्मावत भाषा, किस्सा स्त्री पुरुष दास्तान अमीर-हमजा इत्यादि ॥

८-वैद्यक ॥

निघंट भाषा, वैद्यजीवन भाषा, अमृतसागर, इलाजुल्लगुरबा, हंसराज निदानभाषा टीकासहित, माघवनिदान मूल, निघंटरत्नाकर भाषा इत्यादि ॥

९-ज्योतिष ॥

शीघ्रबोध मै तिलक, जातकचंद्रिका, पत्रा संवत् १९४६ मुरत्तिबा बापूदेवशास्त्री, इन्द्रजाल यंत्र व तंत्र, जंत्री सन् १८८९ ई०, बृहत्संहिता मै तिलक भाषा, मुहूर्त्तचिन्तामणि सटीक, मुहूर्त्तमार्त्तंड, बृहज्जातक सटीक इत्यादि ॥

१०-दरशी ॥

लीलावती भाषा, विद्यार्थीकी प्रथमपुस्तक, प्रेमरत्न इत्यादि ॥

११ स्त्रियों के लिये ॥

भाट्यार्पित, स्त्रीदर्पण, स्त्रीउपदेश पत्रिका इत्यादि ॥

१२—संस्कृत ॥

देवीभागवत मै टीका श्रीधरजी पत्रानुमा, तथा दशमस्कन्ध, मदन-
पारिजात, भगवद्गीता नवीन, निर्णयसिन्धु, दुर्गास्तोत्र मूल तथा मैटीका
इत्यादि ॥

१३—संस्कृत बातर्जुमाउर्दू ॥

व्रतार्क, गीतगोविन्द मै तिलक, कथा ससनारायण मै तिलकतर्जुमा
दशमस्कन्ध पत्रानुमा इत्यादि ॥

१४—मुतफर्रिकात ॥

तर्जुमा कामिल मिताक्षरा मै तिलक भाषा, तिलिस्मफिरंग जिसमें
अंगरेजों के खेलहैं, अजायबुल्मखलूकात बातसवीर, दुर्गायण नवकाण्ड,
ससनाराम विहारवृन्दावन, कल्पभाष्य जिसमें मन्त्र तन्त्र, शुक्रनीति भाषा,
व्याजकी पुस्तक, कैलास आगमन, शंकरदिग्विजय भाषा इत्यादि ॥

१५—संस्कृत बातर्जुमा उर्दू ॥

मनुस्मृति बातर्जुमा उर्दू, महिम्नस्तोत्र बातर्जुमा उर्दू, मार्कण्डेयपुराण
बातर्जुमा उर्दू, भगवद्गीता बातर्जुमा उर्दू, याज्ञवल्क्यस्मृति बातर्जुमा उर्दू,
व्रतार्क बातर्जुमाउर्दू, विष्णुसहस्रनाम मै टीका, बृहत्संहिता मै टीकाउर्दू
इत्यादि ॥